सपने दिखाई देना, आपके क्रिएटिव होने की निशानी है!

वेदा कॉलेज के डीन ऋषि आचार्य ने दै. 'आज का आनंद' से विशेष बातचीत में कहा

एनिमेशन, विजुअल इफेक्ट्स और मीडिया के क्षेत्र केवल कार्टूंस तक ही सीमित नहीं है. कई क्षेत्रों में इनका प्रयोग किया जाता है. 15-20 वर्षों पूर्व लोगों को इन क्षेत्रों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी लेकिन अब इस क्षेत्र के विस्तृत होने से इस विषय में बड़े पैमाने पर जनजागृति हुई है. दै. 'आज का आनंद' के प्रतिनिधि ने एनिमेशन और विजुअल इफेक्ट्स के क्षेत्र के विशेषज्ञ से इस विषय में जानकारी प्राप्त की. प्रस्तुत है, पी. ए. इनामदार कॉलेज ऑफ विजुअल इफेक्ट्स, डिजाइन एंड आर्ट (वेदा) कॉलेज के डीन ऋषि आचार्य से की गई एक खास मुलाकात के कुछ अंश...

ऑग्मेंटेड रियलिटी (एआर) एवं वर्चुअल रियलिटी (वीआर) ये दोनों ही, एनिमेशन और विजुअल इफेक्ट्स के क्षेत्र की लेटेस्ट टेक्नोलॉजी हैं. ऑग्मेंटेड रियलिटी के क्षेत्र में शोध जारी है और इसमें कुछ मात्रा में काम करना भी शुरू किया जा चुका है. एआर टेक्नोलॉजी के कारण अगले पाँच वर्षों में टेक्नोलॉजी में बहुत परिवर्तन होने वाले हैं. लोगों को फिल्म देखने के लिए थिएटर में जाने की जरूरत नहीं होगी. गॉगल्स लगाकर घर बैठे ही फिल्म देखी जा सकेगी. शिक्षा के क्षेत्र में भी इस टेक्नोलॉजी का प्रयोग किया जाएगा. साथ ही मेडिकल के क्षेत्र में भी यह टेक्नोलॉजी कारगर साबित होगी. इस टेक्नोलॉजी के कारण नई क्रांति आ जाएगी.

एक नजर में : ऋषि आचार्य

- जन्म: 23 अगस्त 1982
- पी. ए. इनामदार कॉलेज ऑफ विजुअल इफेक्ट्स डिजाइन एंड आर्ट के डीन
- पिछले 15 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत.
- अब तक 3000 विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान की
- तीन पुस्तकों के लेखक हैं
- मोबाइल : 8888808108

?. अपने बचपन के बारे में बताएँ.

ऋषि आचार्य : मेरा जन्म रतलाम (मध्य प्रदेश) के एक साधारण परिवार में हुआ. मेरे पिता रेलवे के एकाउंट्स डिपार्टमेंट में अधिकारी थे. हम तीन भाई बहन हैं. मेरी स्कूली शिक्षा रतलाम के सरस्वती शिशु मंदिर में हुई है. एनिमेशन की शिक्षा प्राप्त करने के लिए मैं इंदौर गया. लखनऊ यूनिवर्सिटी से मैंने डिस्टेंस एजुकेशन का कोर्स किया है. वहाँ से मैंने मल्टीमीडिया में बीएससी किया है. इंदौर में शिक्षा प्राप्त कर मैं एनिमेशन की उच्च शिक्षा के लिए मुंबई गया. 2005-2008 के दौरान मैंने पुणे के ढोले पाटिल रोड स्थित, राहुल कॉमर्स के थंबनेल एनिमेशन स्टूडियो में एनिमेशन की शिक्षा प्राप्त की. फिर मैंने इन्फर्मेशन टेक्नोलॉजी में एमएससी किया.

?. अपने करियर के सफर के बारे में बताएँ.

ऋषि आचार्य : 2008 में अपनी शिक्षा समाप्त कर, मैंने अरीना मल्टीमीडिया में एकेडमिक हेड के तौर पर काम शुरू किया. वहाँ 3 वर्ष काम करने के बाद, मैं 2010 में पी. ए. इनामदार कॉलेज ऑफ विजुअल इफेक्ट्स डिजाइन एंड आर्टफ (वेदा) कॉलेज में प्रिंसिपल बनकर आया. 2017 से मैं वेदा कॉलेज के डीन के रूप में कार्यरत हूँ. 2010 में जब यह कॉलेज शुरू हुआ था, मैं तभी से इस कॉलेज में कार्यरत हूँ.

?. वेदा कॉलेज के बारे में जानकारी दें.

ऋषि आचार्य : 2010 में वेदा कॉलेज शुरू किया गया और अब तक 3000 छात्र-छात्राएँ यहाँ शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं. यहाँ मीडिया एवं एनिमेशन विषय में बीएससी का डिग्री कोर्स उपलब्ध है. वेदा कॉलेज यशवंतराव चौव्हाण ओपन यूनिवर्सिटी से संलग्न है. यहाँ डिग्री कोर्स में वेब डिजाइनिंग, ग्राफिक डिजाइनिंग, एनिमेशन, विजुअल इफेक्ट्स एवं वीडियो एडिटिंग जैसे सारे विषय पढ़ाए जाते हैं. यहाँ मास्टर्स भी किया जा सकता है. इसके अतिरिक्त यहाँ 4 डिप्लोमा और 10 सर्टिफिकेट कोर्स भी उपलब्ध हैं. यहाँ एनिमेशन स्क्रिप्ट राइटिंग का सर्टिफिकेट कोर्स उपलब्ध है, जो देश के बहुत कम इंस्टिट्यूट्स में उपलब्ध है. हमारे पाठ्यक्रमों की फीस 10,000 से डेढ़ लाख रुपए वार्षिक तक है. हमारे कॉलेज में विद्यार्थियों को केवल शिक्षा ही नहीं दी जाती वरन सामाजिक कार्यक्रमों के द्वारा उनके व्यक्तित्व का विकास अथवा गढ़न भी किया जाता है. हमारे कॉलेज के विद्यार्थियों ने, राज्य भर में एक ही दिन 2,95,000 कपड़े वितरित किए थे. सोशल सर्विस के क्षेत्र में पहली बार इतने बड़े पैमाने पर डोनेशन होने के कारण, कॉलेज का नाम गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड और 'लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड' में दर्ज किया गया है. विद्यार्थी स्वयं रक्तदान शिविर, वृक्षारोपण जैसे कार्यक्रम आयोजित करते हैं. शिक्षा के साथ ही अच्छा नागरिक बनना भी आवश्यक है इसलिए सोशल वर्क में भी उन्हें सहभागी बनाया जाता है.

?. एनिमेशन जैसे एक अलग हटके क्षेत्र की और आपका झुकाव कैसे हुआ?

ऋषि आचार्य : हमारे घर में सभी सरकारी नौकरी करते थे; लेकिन एक बार मेरे पिता ने मुझसे कहा था, नौकरी करने के बजाए नौकरी देने वाले बनो. पिताजी का यह वाक्य मेरे मन में घर कर गया. इसलिए मैंने तय किया कि मैं किसी अलग ही क्षेत्र में जाऊँगा और लोगों को नौकरी दूँगा. अपने बचपन में मैंने, दूरदर्शन पर दिखाई जाने वाली फिल्म डिवीजन की सीरियल अनेकता में एकता कई बार देखी थी. उसका एनिमेशन देखने पर मुझे लगता था कि मैं यह काम कर सकता हूँ. मैंने तभी इस क्षेत्र में आने के बारे में सोच लिया था लेकिन अपने पिता के कहे अनुसार, दूसरों को नौकरी देने के लिए मैंने तय किया कि मैं बच्चों को एनिमेशन पढ़ाऊँगा. आज कुछ हद तक मेरा यह सपना पूरा हो गया है. मेरे कई विद्यार्थी आज देश की बड़ी कंपनियों में और कुछ विदेशी कंपनियों में काम कर रहे हैं. मेरे यहाँ तक पहुंचने के पीछे, मेरे मुश्किल समय का भी बड़ा योगदान है.

?. अपने जीवन के मुश्किल दौर के बारे में बताएँ. आप उससे बाहर कैसे निकले?

ऋषि आचार्य : मेरे लिए रतलाम या इंदौर में रहकर एडवांस्ड एनिमेशन की शिक्षा प्राप्त करना संभव नहीं था क्योंकि वहाँ एडवांस्ड शिक्षा देने वाली संस्थाएँ ही नहीं थीं. किंतु मुझे इसी क्षेत्र में अपना करियर बनाना था. उस समय एनिमेशन के विषय में लोगों को इतनी जानकारी नहीं थी. मेरे सामने समस्या यह थी कि पता नहीं मेरे परिवार वाले मुझे शिक्षा प्राप्त करने के लिए हजारों किलोमीटर दूर भेजेंगे या नहीं? जब मैं शिक्षा प्राप्त करने पुणे आया, तब मैंने घर में किसी को इस विषय में कुछ भी नहीं बताया था. मैं थोड़े से पैसे साथ लेकर पुणे आया था. पैसे कम होने के कारण उस समय कई बार मुझे भूखा रहना पड़ता था. पढ़ाई के दौरान मैं और मेरा मित्र प्रैक्टिस के लिए एक ही कंप्यूटर का उपयोग करते थे. हम दोनों ने इसके लिए दो-दो घंटे बाँट लिए थे. कई बार मुझे सुबह 4:00 से 6:00 के बीच का समय कंप्यूटर पर प्रैक्टिस के लिए मिलता था. सुबह 4:00 बजे प्रैक्टिस करने पर नींद आती थी. मैं ठंडे पानी की बाल्टी लेकर, उसमें पैर रखकर बैठता था, जिससे मेरी नींद भाग जाए और मैं प्रैक्टिस कर सकूँ.

?. एनिमेशन की शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में छात्र-छात्राओं का अनुपात कितना है ?

ऋषि आचार्य : एनिमेशन की पढ़ाई करने वाले छात्र-छात्राओं का अनुपात समान है. एनिमेशन के क्षेत्र के लिए आपका क्रिएटिव होना महत्वपूर्ण है; साथ ही यदि आपकी चित्रकला अच्छी हो तो इस क्षेत्र में उसका फायदा जरूर मिलता है. एनिमेशन और मीडिया के क्षेत्र में फ्रीलांसर के रूप में भी काम किया जा सकता है इसलिए अक्सर बेटियों के पालक उन्हें इस क्षेत्र में भेजते हैं.

?. एनिमेशन और मल्टीमीडिया का कोर्स करने के बाद किस क्षेत्र में काम किया जा सकता है?

ऋषि आचार्य : यह एक आम गलतफहमी है कि एनिमेशन और मल्टीमीडिया का पाठ्यक्रम करने के बाद मनोरंजन अथवा कार्टून के क्षेत्र में ही काम किया जा सकता है. वास्तव में इन क्षेत्रों के अलावा भी कई क्षेत्रों में काम किया जा सकता है. शिक्षा के क्षेत्र में यह टेक्नोलॉजी बड़े पैमाने पर उपयोग में लाई जाती हैं. मेडिकल और इंजीनियरिंग के साथ ही अब स्कूलों में भी इस टेक्नोलॉजी का प्रयोग कर बच्चों को पढ़ाया जाता है. डिस्कवरी चैनल पर शरीर विज्ञान जैसे विषयों की जानकारी देते समय 3D एनिमेशन का प्रयोग किया जाता है. मेडिकल फील्ड में डॉक्टर, पेशेंट को उसकी बीमारी और ऑपरेशन के बारे में समझाने के लिए एनिमेशन का उपयोग करते हैं. ऑटोमोबाइल क्षेत्र में भी एनिमेशन का प्रयोग बढ़ गया है. एनिमेशन की सहायता से फोर-व्हीलर और टू-व्हीलर की डिजाइन बनाई जाती है. रियल स्टेट के क्षेत्र में भी एनिमेशन के माध्यम से 3D फ्लैट बनाकर उसे ग्राहकों को दिखाया जाता है. फिर उसी तरह के फ्लैट का कंस्ट्रक्शन किया जाता है. सुरक्षा के क्षेत्र में भी इस टेक्नोलॉजी का प्रयोग किया जाता है. इसके द्वारा शत्रु पर हमला करने के पहले, उस जगह की जानकारी लेकर फिर हमला किया जाता है. इसलिए अब एनिमेशन और मल्टीमीडिया का कोर्स करने के बाद, कई क्षेत्रों में करियर के अवसर उपलब्ध हो गए हैं.

?. कोर्स पूरा करने के बाद बच्चों को किस तरह के करियर के अवसर प्राप्त होते हैं ?

ऋषि आचार्य : भारत में इस क्षेत्र में करियर के लिए बहुत अच्छे अवसर उपलब्ध हैं और निकट भविष्य में और भी अधिक अवसर निर्मित होंगे. फिक्की के रिपोर्ट में बताया गया है कि 2020 तक भारत के मीडिया क्षेत्र का टर्नओवर 2.26 लाख तक पहुँच जाएगा. इसमें यह भी बताया गया है कि मीडिया का मार्केट साइज 61 हजार करोड़ रुपए है. भारत में वर्ष भर में सभी भाषाओं की, कुल मिलाकर लगभग 1000 फिल्में बनती हैं. फिक्की की रिपोर्ट के अनुसार एनिमेशन और विजुअल इफेक्ट्स का यह मार्केट 11,360 करोड़ रुपए का है. एनिमेशन और विजुअल इफेक्ट्स मीडिया का डिग्री पाठ्यक्रम करने के बाद थोड़ा अनुभव हो तो बच्चों को 20,000-25,000 प्रति माह वेतन मिलता है. यदि 2-3 वर्षों का अनुभव हो तो उन्हें 40 से 45 हजार तक का वेतन मिलता है. फ्रीलांसर के रूप में काम करने वाला व्यक्ति तो बहुत अधिक कमा सकता है. मुंबई, पुणे, हैदराबाद एवं बंगलुरु जैसे कुछ चुनिंदा स्थानों पर ही इससे संबंधित डिग्री कोर्स किए जा सकते हैं.

?. विदेशी एवं भारतीय टेक्नोलॉजी में क्या अंतर दिखाई देता है?

ऋषि आचार्य : वास्तव में विदेशों और भारत में प्रयोग की जा रही टेक्नोलॉजी में कुछ भी अंतर नहीं है. हॉलीवुड की कई फिल्मों के काम भारत में किए जाते हैं. हमारे यहाँ बहुत बढ़िया दर्जे का काम होता है. हमारे पास बढ़िया एनिमेटर और विजुअल इफेक्ट्स देने वाले लोग हैं. टेक्नोलॉजी के मामले में हम जरा भी पीछे नहीं है. भारत में भी ऑग्मेंटेड रियलिटी का प्रयोग किया जाता है. 2D के साथ ही 3D एनीमेशन भी किया जाता है, आजकल इसी टेक्नोलॉजी का प्रयोग किया जा रहा है.

?. बॉलीवुड की फिल्मों के बजाय टेक्नोलॉजी पर आधारित हॉलीवुड की फिल्में अधिक प्रसिद्ध क्यों होती हैं?

ऋषि आचार्य : हॉलीवुड में 1850 के लगभग एनिमेशन इंडस्ट्री की शुरुआत हुई. इस दौरान वहाँ इस पर काम शुरू कर दिया गया था. भारत में, हमारे पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा 1950 में, यह टेक्नोलॉजी भारत लाई गई. उन्होंने वाल्ट डिज्ने से संपर्क कर अपने देश में एनिमेशन के क्षेत्र की शुरुआत की. यानी लगभग 100 वर्षों बाद हमारे देश में यह टेक्नोलॉजी आई; इसके कारण थोड़ा अंतर तो पड़ता ही है. भारत में आज भी पौराणिक कथाओं पर आधारित फिल्में बनाई जाती हैं जिनमें नई कथाएँ नहीं होतीं. इस कारण हमारे पास विषय सीमित हैं. यहाँ एनिमेशन और विजुअल इफेक्ट्स का काम बढ़िया ढंग से होता है लेकिन उसके लिए कहानीकार फिल्म इंडस्ट्री के लोग ही होते हैं. इस कारण वे शूटिंग के दृष्टिकोण से ही कहानी लिखते हैं. लेखन में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है.

विजुअल इफेक्ट्स और एनिमेशन में अंतर है. विजुअल इफेक्ट्स का प्रयोग फिल्म और सीरियलों के लिए किया जाता है. कंप्यूटर के विशिष्ट सॉफ्टवेयर की सहायता से, रियल फुटेज को स्पेशल इफेक्ट्स दिए जाते हैं. फुटेज को अलग तरह से दिखाने के लिए स्पेशल इफेक्ट्स का प्रयोग किया जाता है. पिक्चर को हिलाने के लिए एनिमेशन का प्रयोग किया जाता है. इसके लिए 2D और 3D टेक्नोलॉजी का प्रयोग किया जाता है. टॉम एंड जेरी 2D एनीमेशन का उदाहरण है. ये एनिमेशन हमें फ्लैट स्क्रीन पर दिखाई देते हैं. जुरासिक पार्क, सुपरमैन, स्पाइडर मैन आदि 3D एनिमेशन के उदाहरण हैं.

?. एनिमेशन एवं मल्टीमीडिया के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए कौन से गुण आवश्यक हैं?

ऋषि आचार्य : इस क्षेत्र में करियर बनाने के लिए क्रिएटिविटी बहुत महत्वपूर्ण है लेकिन भारत में क्रिएटिव व्यक्ति से तात्पर्य बहुत यश प्राप्त करने वाले व्यक्ति से लिया जाता है, जो सही नहीं है. मैं बच्चों से पूछता हूँ कि क्या उन्हें रात में सपने दिखाई देते हैं? जिनका उत्तर हाँ में होता है, वे सभी बच्चे क्रिएटिव होते हैं. जिन बच्चों में क्रिएटिविटी का गुण हो, वे इस क्षेत्र में अच्छी तरह काम कर सकते हैं. साथ ही उनमें चित्रकारी का गुण भी हो तो फायदा जरूर होता है. जिन लोगों में कहानी सुनाने की कला होती है वे भी इसमें अच्छा करियर बना सकते हैं. एनिमेशन के क्षेत्र में अच्छी कहानियाँ सुनाने वाले लोगों की आवश्यकता है. कहानी अच्छी हो तो इसका फायदा जरूर मिलता है. लिटिल कृष्णा, माय फ्रेंड गणेशा जैसे कार्टूंस के कारण इस क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं. साथ ही छोटा भीम के कारण कई समीकरण बदल गए हैं.

?. पालकों के लिए आपकी क्या सलाह है?

ऋषि आचार्य : आजकल भारत में हर क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बहुत बढ़ गई है. इसलिए पालकों को लगता है कि इस प्रतिस्पर्धा में टिके रहने के लिए बच्चों को 90% मिलने ही चाहिए. लेकिन यह एक बड़ी गलतफहमी है कि इससे कम अंक मिलने पर करियर बनाने की कोई संभावना ही नहीं है. यदि बच्चों में कला एवं क्रिएटिविटी हो तो वे कला के क्षेत्र में अच्छा करियर बना सकते हैं. पालकों को, बारहवीं के बाद करियर ऑप्शन्स में केवल डॉक्टर, इंजीनियर और मैनेजमेंट के ही बारे में जानकारी होती है. बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार करियर चुनने की स्वतंत्रता दें. मोबाइल, कंप्यूटर पर गेम खेलने वाले बच्चों को पालक डाँटते हैं; लेकिन यदि बच्चा उसमें निपुण हो तो वह गेमिंग के क्षेत्र में भी अपना करियर बना सकता है. ज्यादा गेम्स खेलने वाले बच्चे, गेमिंग क्षेत्र में बहुत नाम कमा सकते हैं. हमारे यहाँ अभी तक इस क्षेत्र में अपेक्षित जागृति नहीं हुई है. इस विषय की जानकारी देने के लिए, जूनियर कॉलेजों में भी सेमिनार आयोजित करने चाहिए. इससे पालकों को भी इस विषय के बारे में जानकारी हासिल होगी. इससे बच्चों के लिए अच्छे करियर ऑप्शन निर्मित होंगे.

?. विद्यार्थियों के लिए आपकी क्या सलाह है?

ऋषि आचार्य : आजकल के विद्यार्थी बहुत क्रिएटिव हैं. उन्हें विभिन्न तरह के करियर के बारे में जानकारी होती है लेकिन उनके ज्ञान का उचित उपयोग होना चाहिए. अपनी विद्यार्थी दशा में मैंने बहुत मेहनत से तथा समय लगाकर पढ़ाई की है; लेकिन आज के विद्यार्थियों को स्मार्ट फोन और इंटरनेट के कारण मनोरंजन के साधन सहज उपलब्ध हो गए हैं. इस कारण उनका अधिकांश समय इन्हीं में व्यतीत हो जाता है. वर्तमान समय में विद्यार्थियों को समय का नियोजन कर पढ़ाई करनी चाहिए. पढ़ाई करते समय फोकस हटना नहीं चाहिए. आजकल विद्यार्थियों के लिए बड़े पैमाने पर ज्ञान उपलब्ध है, जिसे उन्हें आत्मसात करना चाहिए.

?. अपने शौक के बारे में बताएँ.

ऋषि आचार्य : मुझे बच्चों को पढ़ाना अच्छा लगता है लेकिन साथ ही लेखन भी पसंद है. अब तक मेरी 3 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं- सफलता की 21 चाबियाँ, 10 वैज्ञानिक क्रांतिकारी और इस्लाम-एक हिंदू की कहानी. इस वर्ष के अंत तक चौथी पुस्तक भी प्रकाशित हो जाएगी. इस्लाम-एक हिंदू की कहानी में, मेरे मुस्लिम कैंपस में काम करने के अनुभव हैं. मैंने, एनिमेशन एवं मीडिया के क्षेत्र में, करियर के विषय पर गाइडेंस देने वाली पुस्तक भी लिखी है. इस क्षेत्र के बारे में जानकारी प्रदान करने वाली पुस्तक जल्द ही प्रकाशित होने वाली है. मुझे जब भी समय मिलता है, मैं लेखन करता हूँ.

?. अपने परिवार के बारे में बताएँ.

ऋषि आचार्य : मेरे परिवार में मेरे पिता श्री विद्यासागर आचार्य हैं. मेरे पिता सेवानिवृत्त रेलवे अधिकारी हैं. मेरी माँ श्रीमती आशा एक गृहिणी हैं. मेरे भाई का नाम अभिषेक है और भाभी का नाम मानसी है. वे बेल्जियम में जॉब करती हैं. मेरी बहन का नाम ऋचा है और वह अमेरिका में नौकरी करती हैं.

Popular among lacs of readers across Maharashtra
3 Daily Newspapers in 3 Languages

हिंदी दैनिक | मराठी दैनिक | English Daily

Newspapers filled with Education & Entertainment content

For last 49 years, Aaj Ka Anand group has been involved in giving quality reading material to the readers through its dailies... The thirst for knowledge, education and information of readers is identified by the group and the same is shared in the dailies... These are the dailies which have something to read for everyone in the family...